ऑनलाइन शिक्षण– कैसे लगे मन

– डॉ. संगीता बिल्लौरे

'यदि कोई कार्य एक चुनौती या शर्त की शक्ल में दिया जाता है तो मानो मस्तिष्क अधिक स्फूर्त हो जाता है और कार्य क्षमता में वृद्धि होती है।' किन्तु इस कोविड महामारी में बच्चों के अध्ययन को लेकर यह कथ्य साकार होना असम्भव सा लग रहा था। ऐसे में गरीब, कमजोर परिवार के बच्चों को एकत्र कर मोहल्ला कक्षा का आयोजन करना एक बड़ी चुनौती थी। स्थान का अभाव व एक साथ एक ही कक्षा के बच्चों को बुलाना नामुमकिन था। पहले तो बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उन बच्चों के पास कोरोना प्रोटोकॉल को फॉलो कर सके ऐसे संसाधन नहीं थे।

सर्वप्रथम किसी एक स्थान का चयन किया जैसे चबूतरा या किसी बच्चे के घर की दालान वहां केवल आठ या दस बच्चे बच्चे ही बैठ सकते थे। उन्हें मास्क बांटे गए सैनिटाइजर रखा गया अलग–अलग वर्ग व भिन्न स्तर के बच्चों को कक्षा में सम्मिलित करना पड़ा और मोहल्ला कक्षा प्रारम्भ की गई।

कार्य में आने वाली चुनौतियां

1. अलग–अलग स्तर व भिन्न कक्षा के बच्चों को पाठ्यपुस्तक से कैसे जोड़ें पहली समस्या तो यही थी।
2. इस वर्ष कक्षा 6 में सामाजिक विज्ञान विषय की एन.सी.ई.आर.टी.की पुस्तकें अलग–अलग भाग में लागू हुईं। बच्चे इस पैटर्न से परिचित नहीं थे।
3. मोहल्ला कक्षा में विलम्ब होना माध्यमिक विभाग में एक शिक्षिका होने के कारण सभी बच्चों की मोहल्ला कक्षा नियमित नहीं हो सकी।
4. मोबाईल/इन्टरनेट बच्चों के पास उललब्ध नहीं थे यदि ऑनलाइन क्लास हुई भी तो समाजीकरण की प्रक्रिया ऑनलाइन नहीं हो सकती। सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ाने के लिए शिक्षक और बच्चों का आपस में संवाद चर्चा आवश्यक है।
5. 'भूखे पेट भजन न होहिं' बच्चों की आर्थिक मजबूरी उन्हें पढ़ाई से दूर कर देती है जैसे कोई बच्चा भैंस चराने जाता है कोई खेत पर काम करने, कोई मजदूरी करने। कोई छोटे भाई–बहन की देखरेख करता है।

थीम का चयन

विभिन्न वर्ग के विभिन्न स्तर के बच्चों में विविधता देखकर एवं इस कोविड के दौरान हमारी कार्य शैली, दिनचर्या, शिक्षण पद्धति को लेकर जो विविधता सामने आयी इसी विभिन्नताओं को बच्चों से साझा करना था। इसलिए मैंने सामाजिक विज्ञान के प्रथम व द्वितीय पाठ के हिस्से को अपनी थीम में चुना।

विविधता की समझ, विविधता एवं भेदभाव अवधारणा को समझना आवश्यक था क्योंकि घरों से शुरू होती विभिन्नताएं, रुचियां, खानपान, रहन–सहन व्यापक समाज में कैसे अपना प्रभाव डालती हैं? बच्चे इस पूरी प्रक्रिया को समझ सकें। उन्हें कहां–कहां और किस रूप में विविधता और भेदभाव देखने को मिलता है या महसूस होता है इसकी अनुभूति कराना थीम का उद्देश्य था।

कौन सी पेडॉगाजी अपनायी

1. सामान्यतः कक्षाओं में हम पाठ्यपुस्तक द्वारा रीडिंग व चर्चा की पद्धति को अपनाते हैं फिर प्रश्नोत्तर के द्वारा पाठ्यवस्तु का समापन करते हैं। लेकिन मोहल्ला कक्षा में मैंने बच्चों को कुछ प्रश्नों के उत्तर अपने परिवार के सदस्यों से पूछकर लिखने को दिये जैसे– प्रत्येक सदस्य की पसन्द नापसन्द जानने, कार्यों की शैली व लिंग के आधार पर उनके कार्यों का चयन इत्यादि। अपनी पसन्द, मां को खाने में, पहनने में क्या अच्छा लगता है? भाई को क्या पसन्द हैं? पिताजी कौन सा कार्य करना पसन्द करते हैं? आदि घर–परिवार व आसपास कोई झगड़ा होता है? झगड़े का कारण आदि।
2. बच्चों को मां की पाठशाला के अन्तर्गत पुस्तकालय से छींका–छींक नामक रोचक मजेदार कहानी छुटनक्कू और बडनक्कू पात्र जिनमें शारीरिक भिन्नता से बात को प्रारम्भ किया गया है। उनकी कहानी से बच्चों को बताया कि सभी मानव जन एक– जैसे नहीं होते, कोई गोरा, कोई काला, कोई

लंबा, कोई नाटा व कोई मोटा तो कोई दुबला होता है। प्रकृति ने सबकी अपनी कोई न कोई विशेषताएं बनायी हैं। इस प्रकार चर्चा कर मोहल्ला क्लास में बच्चों ने विविधता को लेकर कुछ ड्रॉइंग बनायी उन्हें समूह में बांटकर अलग वर्कशीट पर कार्य करने को दिया इस प्रकार सामान्य कक्षा से हटकर शिक्षण–पद्धति अपनायी गई। आमतौर पर बच्चे कक्षा में शिक्षक से इतना खुलकर संवाद नहीं कर पाते हैं क्योंकि शिक्षक कई गैर शैक्षणिक कार्यों में व्यस्त रहते है? किसी एक थीम पर इतनी गहराई से संवाद और चर्चा नहीं कर पाते। बच्चे अपने–अपने अनुभव शिक्षक के साथ साझा कर पा रहे थे। अपने पारिवारिक विवादों व परिवेश को बताने में झिझक नहीं रहे थे।

सेमिनार की प्रस्तुति के समय पर्चा वाचन करने व लिखने में क्या चुनौतियां आई ?

1. मोहल्ला कक्षा में की गई गतिविधियों के अभिलेख संधारित करने में समस्या आयी क्योंकि हर एक मोहल्ला कक्षा में अलग–अलग बच्चे होते थे। हमने जिन बच्चों को लेकर काम किया उनसे लगातार सम्पर्क नहीं हो पाता था।
2. दस्तावेजीकरण करने में टाइपिंग की समस्या तकनीकी ज्ञान का अभाव होने के कारण पी.पी.टी. तैयार करना व स्लाइड बनाने में समस्या उसे सिलसिलेवार प्रस्तुत करने के लिए विडियो, फोटोग्राफ व लिखित आलेख का समायोजन करने में कठिनाई महसूस हुई।
3. यह पर्चा वेबिनार फार्म के स्थान पर सेमिनार के रूप में होता तो ज्यादा अच्छा प्रस्तुतिकरण हो पाता। सेमिनार में पर्चा पढ़ते हुए मुझे बडा गर्व महसूस हुआ। आत्मविश्वास के साथ हम अपने कार्यानुभव साझा कर पाए। सामाजिक विज्ञान विषय की महत्ता केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित नहीं है हमें बच्चों के स्तर तक आकर काम करना पड़ता है इस प्रक्रिया में स्वयं का भी समाजीकरण होता है।

लेखिका शासकीय माध्यमिक शाला नरोन्हा सॉकल, भोपाल, मध्यप्रदेश में शिक्षिका हैं।

शिक्षक सृजन

तुमको पहाड़ आना होगा

दिव्यांशु, प्राथमिक विद्यालय ननूरखेड़ा, रायपुर, देहरादून

प्यारे भइया, प्यारी बहना,
मम्मी-पापा जी से कहना,
इस छुट्टी में जाना है,
देख हिमालय आना है।
जब पहाड़ में आओगे,
हवा तुम्हें सहलायेगी,
स्वागत प्यारे बच्चों कहकर,
मंद-मंद मुस्काएगी।
यहां पहाड़ की कठिन चढ़ाई,
कठिन परीक्षा लेती है,
फिर ढलान धीरे-धीरे,
सारी थकान हर लेती है।
नदिया की कल-कल लहरें,
जीवन संगीत सुनाती हैं,
बढ़ते जाओ, चढ़ते जाओ,
हवा कान में गाती है।
तन-मन को शीतल कर दे,
यादों का बाना होगा,
सुंदर पहाड़ अनुभव करने,
तुमको पहाड़ आना होगा।

– राकेश जुगरान

प्राचार्य, डायट, देहारादून, उत्तराखण्ड